Date 15/02/2024 महिला कॉलेज डालटेनगंज B.A II (Hons)

Research Methodology मनोविज्ञान विभाग Group - A

PAPER IV Dr Kusum Kumari

(1) Meaning and Types of Psychological Research

मनोवैज्ञानिक शोध के अर्थ एवं प्रकार।

मनोवैज्ञानिक शोध क्या है? इस प्रश्न पर यदि सामान्यतः विचार किया जाए तो हम आसानी से इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि मनोविज्ञान के भिन्न-भिन्न क्षेत्र में किये गए प्रत्येक तरह के शोध को मनोवैज्ञानिक शोध कहा जाता है। डी० मैरी 1997 ने मनोवैज्ञानिक शोध को परिभाषित करते हुए कहा है "मनोवैज्ञानिक शोध के अन्तर्गत मनोविज्ञान के क्षेत्र के भीतर की समस्याओं के बारे में किये गये सभी तरह के शोध को रखा जाता है। इस तरह से मनोविज्ञान की विभिन्न शाखाओं जैसे प्रायोगिक मनोविज्ञान, समाज मनोविज्ञान, शिक्षा मनोविज्ञान, व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, नैदानिक मनोविज्ञान आदि में किये गये सभी तरह के शोध चाहे वे प्रयोगात्मक हो या अप्रयोगात्मक हो मनोवैज्ञानिक शोध कहलाते हैं। मनोवैज्ञानिकों ने मनोवैज्ञानिक शोध को मुख्यतः दो विस्तृत भागों में बाँटा गया है:-

(अ) आनुभविक शोध (Empirical Research)

(ब) सैद्धांतिक शोध (Theoretical Research)

~~(स) आनुभविक शोध (Empirical Research)~~

(ब) सैद्धांतिक शोध:- जैसा कि नाम से स्पष्ट है, सैद्धांतिक शोध से तात्पर्य उन सभी तरह के शोधों से होता है जिसमें सामान्य मनोविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में सिद्धांत के निर्माण एवं विकास से होता है।

(अ) आनुभविक शोध:- आनुभविक शोध किसे कहते हैं? इस प्रश्न पर विचार करने के पहले यह जानना उचित होगा कि आनुभविक पद का अर्थ मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षिक शोध में क्या होता है। मनोविज्ञान में आनुभविक पद का प्रयोग कई विभिन्न अर्थों में किया गया है। शोध में इस पद का अर्थ उन विधियों से होता है जो प्रयोगात्मक होते हैं तथा जो तथ्य एवं मूल्यांकन पर आधारित होते हैं। इस प्रकार तब आनुभविक शोध से तात्पर्य वैसे शोध से होता है जिसमें व्यवस्थित प्रयोग होता है तथा जिसकी विधियाँ समस्या का तथ्यपूर्ण मूल्यांकन है। मनोवैज्ञानिकों ने आनुभविक शोध के निम्नलिखित तीन प्रकार बतलाये हैं

(A) प्रेक्षण (Observation)- मनोवैज्ञानिक शैक्षिक समाज व्यावहारिक शोध में प्रेक्षण प्रमुख शोध का एक प्रकार है। प्रेक्षण वैसे शोध को कहा जाता है जिसमें शोधकर्ता … में बिना किसी तरह के

(2)

जोड़-तोड़ किसी भी अध्ययन से सम्बंधित घटनाओं के क्रम का अवलोकन करता है, उसके महत्वपूर्ण तथ्यों को लिखते जाता है और उसका एक अभिलेखन या रिकार्ड तैयार करता है। अभिलेखन या रिकार्ड किये गए व्यवहारों का विश्लेषण कर शोधकर्ता एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचता है।
मनोवैज्ञानिक शोध Psychological research में प्रेक्षण के दो प्रकार बतलाये जाते हैं।

(i) स्वाभाविक प्रेक्षण (Natural Observation)
(ii) प्रयोगशाला प्रेक्षण (Laboratory observation)

स्वाभाविक प्रेक्षण Natural observation से तात्पर्य वैसे प्रेक्षण से होता है जिसमें घटनाओं या व्यक्तियों के व्यवहारों का प्रेक्षण किसी स्वाभाविक परिस्थिति जैसे स्कूल, कॉलेज, खेलकूद प्लेटफार्म, बस अड्डा, खेल का मैदान आदि में किया जाता है। प्रयोगशाला प्रेक्षण वैसे प्रेक्षण को कहा जाता है जिसमें प्रेक्षक घटनाओं का निरीक्षण एक नियंत्रित अवस्था में करता है। नियंत्रित अवस्था के होने से प्रेक्षक परिस्थिति पर आवश्यक नियंत्रण कर पाता है तथा साथ ही साथ अपनी अध्ययन की समस्या के अनुकूल परिस्थिति भी उत्पन्न कर लेता है।

(B) सहसंबंधात्मक शोध (Correlational Research):- मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षिक शोध में सहसंबंधात्मक शोध का काफी महत्व है क्योंकि इस तरह के शोध का प्रचलन मनोवैज्ञानिक तथा शिक्षा के अनेक क्षेत्रों में है। सहसंबंधात्मक शोध के प्रधान समर्थक क्रानबैक 1957 तथा गिल्फोर्ड 1966 है। इन लोगों के अनुसार सहसम्बन्धात्मक शोध वैसे शोध को कहा जाता है जिसमें शोधकर्ता चरों में जोड़-तोड़ सीधे न करके चयन प्रक्रिया द्वारा करता है तथा फिर एक स्वाभाविक परिस्थिति में अध्ययन करता है कि कहाँ तक एक चर में किया गया जोड़-तोड़ दूसरे चर में जोड़-तोड़ से सम्बंधित है।

(C) प्रयोगात्मक शोध (Experimental Research):- प्रयोगात्मक शोध वैसे शोध को कहा जाता है जिसमें शोधकर्ता अध्ययन किये जाने वाले चर में जोड़-तोड़ का पड़ने वाला प्रभाव दूसरे चर पर देखता है जिस चर में जोड़-तोड़ सीधे किया जाता है उसे उसे टाईप ई स्वतंत्र चर n type-Ind-ependent variable कहा जाता है। प्रयोगात्मक शोध के लिए यह आवश्यक नहीं है कि एक प्रयोगशाला ही हो। सच्चाई यह है कि इस तरह का शोध के लिए यह आवश्यक नहीं है कि एक प्रयोगशाला ही हो। प्रयोगशाला में भी किया जा सकता है या क्षेत्र में भी किया जा सकता है। जब इस

(3)

जब कार्य प्रयोगशाला में किया जाता है तो उसे प्रयोगशाला प्रयोग (Laboratory Experiment) कहा जाता है तथा जब कार्य क्षेत्र में किया जाता है तो उसे क्षेत्र प्रयोग (Field Experiment) कहा जाता है।

(ग) सैद्धान्तिक शोध :→ जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि सैद्धान्तिक शोध से तात्पर्य उन सभी तरह के शोधों से होता है जिनका सम्बन्ध मनोविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में सिद्धांत के निर्माण एवं विकास से होता है। इस प्रकार के सैद्धान्तिक शोध को मनोवैज्ञानिकों ने मूलतः दो भागों में बांटा है।

1. पुस्तकालय शोध (Library Research)
2. सिद्धान्त रचना (Theory Construction)

पुस्तकालय शोध :→ पुस्तकालय शोध वैसे शोध को कहा जाता है जिसमें शोधकर्ता स्वयं आंकड़ों का संग्रह नहीं करता बल्कि आनुभविक विधियों के अनुकूल शोध समस्या से सम्बन्धित आंकड़ों को संकलित करता है या उनकी तरह के आवश्यक आंकड़ों को मिलाकर उसमें किसी अर्थ को निकालता है तथा एक ~~सामान्यतः~~ सामान्यीकरण करता है। इसमें समस्या से सम्बन्धित सभी तरह के आंकड़ों का विस्तृत मूल्यांकन किया जाता है ताकि सामान्यीकरण गलत न हो सके।

सिद्धान्त रचना :→ सिद्धान्त रचना में शोध का मुख्य उद्देश्य मनोविज्ञान के क्षेत्रों की सवाल समस्या के स्वरूप को स्पष्ट करने के ख्याल से सिद्धान्त की रचना की जाती है। आधुनिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा अधिकतर वैसे सिद्धांतों की रचना की जा रही है जो अधिक औपचारिक और गणितीय होते हैं एवं जिनके चरों को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जाता है तथा उनमें एक खास ढंग से संबंध की व्याख्या पर अधिक बल डाला जाता है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण सूचना संसाधन सिद्धांतों में मिलता है जिनमें विभिन्न तरह के computer model पर आधारित सिद्धान्त हैं।